Lockdown का प्रभाव

जीवन की भाग दौड़ में

ज़िंदगी की रफ़्तार का यूं थम जाना

मानो एक अमुक संदेश प्रकृति का---

मनुष्य की कैद और भय ज़रूरी है प्रकृति के लिए

ताकि वह भी ले सके सांस इस क्रूर दुनिया में कुछ पल के लिए

मुद्दतों बाद खुश है आज बूढ़ा दरख़्त

शाख़ से टूटे पत्तों को आज रौंदने ना आया कोई शख़्स

अब फिर से चार दिवारी में रिश्ते लगे सिमटने

शतरंज की बाजियां, कैरम के दाव लगे हैं दिखने

ज़िंदगी थम सी गई है, किनारा नज़र नहीं आता

गली हो या मुहल्ला, किसी का सहारा नज़र नहीं आता

पंछी पेड़ो से पूछते कि इस शहर का इंसान कहां है

क्यों इतना सन्नाटा और सुनसान यहां है

दिख जाती है एक हिरणी अब

शहर की सुनसान सड़कों पर, अपने नन्हों के साथ

और दिख जाते हैं गर्द से छिपे थे जो कभी शिवालिक के पहाड़

इस lockdown ने हमें ना जाने कितना कुछ सिखाया

किसी को अच्छा कुक तो किसी को चित्रकार बनाया

और अंत में

अभी भी वक्त है संभल जायो दोस्तो

Lockdown का पूर्णतः करलो पालन

वर्ना कुछ पल और जीने का एहसास

मन में ही रह जाएगा दोस्तो

मन में ही रह जाएगा दोस्तो |